मानव तन की सार्थकता

प्रो. (डॉ.) सोहन राज तातेड़,
पूर्व कुलपति सिंघानिया विश्वविद्यालय, राजस्थान

हमने मनुष्य के रूप में धरती पर जन्म लिया है। मानव धरती पर सर्वश्रेष्ठ प्राणी है। मनुष्य के पास विकसित बुद्धि, चित्त और आत्मा है। चौरासी लाख जीव यानियों में कोई प्राणी मानव जैसा विकसित नहीं हैं। पशु–पक्षी जितने भी जीव हैं उनमें चेतना का विकास पूर्ण नहीं है। पशु–पक्षी अपना भरण–पोषण करके जीवन यापन करते हैं। पेड़–पौधे हमें आक्सीजन देते हैं और कार्बनडाईआक्साईड ग्रहण करते हैं। मानव जीवन का विकास सभी प्राणियों से अधिक है। मानव जीवन की सार्थकता को जानकर ही यह निश्चित होता है कि मानव जो कार्य करेगा वह सर्वजन हितया और सर्वजन सुखाय होगा। जन्म से ही जाति, धर्म निश्चित हो जाता है। मानव में कर्तापन का भाव आ जाता है। मैं और मेरेपन का भाव सभी प्राणियों में आ जाता है। गीता में भगवान श्री कृष्ण ने मानव को कर्तापन के त्याग का उपदेश दिया है। यदि मैं और मेरे तक ही हम सीमित रह जाते हैं तो यह स्वार्थ का स्तर है। शरीर से जुड़ा हुआ स्तर स्व तक सीमित है। परार्थ की चिंता **सर्वे भवन्तु सुखिनः** की भावना है।

किसी भी प्राणी को दुख देना पाप है। परमार्थ का जीवन जीने वाला व्यक्ति स्वार्थ के सम्बन्ध को छोड़कर मानवता के लिए जीता है। मानव तन की सार्थकता यही है कि धर्म, कर्म में जीवन को लगाया जाये। मानवेतर जितने भी प्राणी हैं उनमें स्वार्थ की भावना रहती है वे केवल अपना पेट पालन करते हैं, किन्तु मानव एक ऐसा प्राणी है जिसमें स्व के साथ पर की भावना भी रहती है। समाज में धनी और निर्धन सभी प्रकार के प्राणी रहते हैं। मानव होने के नाते सभी एक–दूसरे से जुड़े हुए हैं। समाज का सुख–दुःख जो व्यक्ति अपना मानता है वही सच्चा मनुष्य है। मानव जीवन में परोपकार की भावना होनी चाहिए। नदियां, पेड़–पौधे, सूर्य–चन्द्रमा सभी अपने लिए नहीं बल्कि दूसरों के लिए हैं। नदी स्वयं अपना जल ग्रहण नहीं करती। सूर्य और चन्द्रमा का प्रकाश सभी प्राणी अपनी इच्छानुसार ग्रहण करते हैं। वृक्ष अपना फल स्वयं नहीं खाता बल्कि अन्य जीव उसके फल से तृप्त होते हैं। इस सबकों देखकर यही

प्रतीत होता है कि परोपकार करना चाहिए। मानव तन इसीलिए प्राप्त हुआ है कि इसका अधिक से अधिक उपयोग राष्ट्रहित और समाज हित में किया जाये।

परहित सरिष धर्म नहिं भायी का अर्थ है परोपकार के समान कोई दूसरा धर्म नहीं है। परोपकार मानव का सर्वोत्तम गुण है। परोपकार के द्वारा मानव संसार को जीत सकता है। प्रकृति हमें परोपकार की प्रेरणा देती है। वृक्ष परोपकार के लिए फल देते हैं। नदियां परोपकार के लिए बहती हैं। सूर्य और चन्द्रमा का प्रकाश हमें परोपकार की शिक्षा देता है। परोपकार के द्वारा जगत का कल्याण होता है। भारतीय संस्कृति में परोपकार की महिमा का गुणगान हुआ है। परोपकार का तात्पर्य है निष्काम भाव से दूसरों का उपकार करना। स्वार्थ और परार्थ से यह विश्व बना है। स्वार्थ का मतलब होता है सबकुछ अपने लिए करना, अपने परिवार के लिए करना, अपने सगे–संबंधियों के लिए करना। स्वार्थ में अपना हितचिंतन प्रदान होता है। परार्थ ठीक इसके विपरीत है। परार्थ ही परोपकार है। परोपकार में हम अपना हित छोड़कर दूसरों के लिए कार्य करते है। यही मानव तन की सार्थकता है। इसलिए परोपकार करना चाहिए।

शास्त्रों में परोपकार की महिमा का वर्णन खूब किया गया है। कहा गया है हाथ की शोभा दान देने से है, न कि कंगन पहनने से। वाणी की शोभा हितवचन बोलने में है, न कि बुरा वचन। बुद्धि का कार्य रचनात्मक विश्व का निर्माण करने में है, न कि विध्वंसात्मक कार्य करने में। मानव और प्रकृति एक–दूसरे के पूरक हैं। मानव का कार्य स्वार्थ और परार्थ दोनों प्रकार का होता है, किन्तु प्रकृति परोपकार ही करती है और अपना सबकुछ मानव के लिए न्यौछावर कर देती है। नदियां परोपकार के लिए ही बहती है। उसका स्वादपूर्ण और मीठा जल मानव, जीव–जन्तु, पशु–पक्षी सभी पीकर अपने जीवन का निर्वाह करते हैं। वृक्षों में लगा हुआ फल सभी प्राणी अपने इच्छानुसार खाते हैं। वृक्ष स्वयं फल नहीं खाता, नदियां स्वयं जल नहीं पीती, बल्कि परोपकार के लिए ही प्रकृति कार्य करती है। पृथ्वी के गर्भ में समाया हुआ खनिज पदार्थ किसके लिए है? निश्चित ही यह मनुष्यों के लिए है। अतः इनका उपयोग मानव को सावधानी पूर्वक करना चाहिए।

आज मानव की प्रवृत्ति ऐसी हो गयी है कि वह अपनी इच्छाओं की पूर्ति के लिए अंधाधुंध इसका दोहन कर रहा है। खनिज पदार्थ तो सीमित है। अगर इसी प्रकार से इसका दोहन होता रहा तो निश्चित ही एक दिन पृथ्वी का खजाना खाली हो जायेगा और वह इसकी पूर्ति कैसे करेगी। मानव का यह कर्त्तव्य है कि वह स्वार्थ को छोड़कर परार्थ के लिए दोहन बंद करे और जहां तक हो सके जितना ग्रहण करे उससे अधिक देने का प्रयास करे। तभी परोपकार की सार्थकता है। परोपकार का क्षेत्र बहुत ही विस्तृत है। यह सृष्टि ही परोपकार के ऊपर टिकी हुई है। श्रमशील मानव का यह कर्त्तव्य है अपने श्रम के द्वारा वह परोपकार करे। जिसके पास धन है, वह धन देकर आर्थिक सहायता देकर लोगों की सेवा करे।